बरेली, रविवार
17 नवंबर 2019
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 6.00
पृष्ठ 24+4=28

दैनिक जागरण

संक्रमण रहित आइसीयू की जरूरत

बोले विशेषज्ञ, आइसीयू में पहले से मौजूद बैक्टीरिया निमोनिया मरीजों के लिए खतरा

जागरण संवाददाता, बरेली : फेफड़ों का संक्रमण यानी निमोनिया देश में बीमारियों से होने वाली मौतों में छठे नंबर पर है। मरीज के शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने पर यह जल्दी असर डालता है। आइसीयू (इन्टेंसिव केयर यूनिट) में निमोनिया के मरीज इंफेक्शन के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। वहां पहले से ही मौजूद वायरस, बैक्टीरिया के संक्रमण से मरीज की जान पर भी बन सकती है। इसके चलते मरीजों को हाई पावर दवाओं में रखना होता है। इसलिए आइसीयू में संक्रमण नहीं होना चाहिए। अमेरिका में एक साल में एक भी ऐसा मामला नहीं आया। वजह वहां के आइसीयू संक्रमण रहित हैं। ऐसे ही आइसीयू की देश में भी जरूरत है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (दिल्ली) से आए डॉ. जीसी खिलनानी ने ये बातें साझा कीं, श्री राममूर्ति स्मारक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयोजित पांचवीं अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस (मेडिसिन अपडेट 2019) में। इसमें वह बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। दो दिवसीय मेडिसिन अपडेट के पहले दिन पांच सत्रों में विशेषज्ञों ने डॉक्टर्स, छात्र-छात्राओं को चिकित्सा जगत की नई तकनीकों से रूबरू कराया। इससे पूर्व कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के चेयरमैन देवमूर्ति समेत अन्य अतिथियों ने किया। प्रथम सत्र में पेट संबंधित रोगों पर चर्चा हुई।

डॉ. जीसी खिलनानी ● जागरण

एसआरएमएस में मेडीसिन पर हुए सेमिनार के दौरान स्मारिका का विमोचन करते विशिष्टजन ● सौजन्य से एसआरएमएस

अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस

- **चिकित्सा क्षेत्र की नई तकनीकों से रूबरू हुए डॉक्टर व छात्र-छात्राएं**
- **विशेषज्ञों ने अमेरिका जैसे आइसीयू बनाने की देश में बताई जरूरत**

हैदराबाद के डॉ. पीएन राव, बीएचयू के डॉ. विनोद दीक्षित (बीएचयू) व सर गंगाराम के डॉ. अनिल अरोरा ने दवाओं के साइड इफेक्ट के कारण लिवर में आई दिक्कत की जांच, एच फिलोरी वायरस, क्रोनिक हेपेटाइटिस बी के उपचार बताया। दूसरे सत्र में नई दिल्ली के डॉ. लोकेंद्र कुमार, केजीएमयू के डॉ. राजीव गर्ग ने छाती व श्वास संबंधित रोगों व क्रिटिकल केयर के बारे में जानकारी दी। तीसरे सत्र में गोरखपुर के डॉ. आलोक गुप्ता, शहर के डॉ. एके चौहान व लखनऊ के संजय टंडन ने ग्रंथी व स्राव रोगों पर अपने अनुभव साझा किए। चौथे सत्र में पीजीआइ रोहतक के डॉ. हरप्रीत सिंह और फोर्टिस जयपुर के डॉ. अमित शर्मा ने हड्डी व जोड़ रोगों की जांच के संबंध में नई जानकारियां दीं। पांचवे सत्र में संक्रमण की गंभीरता के बारे में पीजीआइ रोहतक की डॉ. सुनीता ने जानकारी दी। कार्यक्रम में प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करने व पौधे लगाने का संदेश भी दिया गया। संस्थान के प्रशासनिक निदेशक आदित्य मूर्ति ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य मेडिकल छात्र-छात्राओं को चिकित्सा जगत की नवीन तकनीकों से अवगत कराना है। आयोजन सचिव डॉ. स्मिता गुप्ता ने सभी का स्वागत किया। इस दौरान कांफ्रेंस की आयोजन अध्यक्षा डॉ. निर्मल यादव, डॉ. शरद जौहरी, प्राचार्य डॉ. एसबी गुप्ता, सीएमएस डॉ. एके गुप्ता के अलावा देश-विदेश के चार सौ से अधिक फिजिशियन व छात्र-छात्राएं शामिल रहे। इंग्लैंड से आए डॉ. राज चन्द्रप्पा ने बताया कि डेंगू के पांच से दस फीसद मरीजों में ब्रेन इंफेक्शन का भी खतरा रहता है। वायरस का दिमाग में संक्रमण इंफेसिलाइटिस बन जाता है। ऐसा होने पर तीव्र सिर दर्द, दौरे पड़ना, भ्रम की स्थिति होने की शिकायत रहती है। ऐसे में बीमारी का जल्द पता चलना जरूरी है।

मोटापे के कारण लीवर को भी खतरा, रहें सावधान

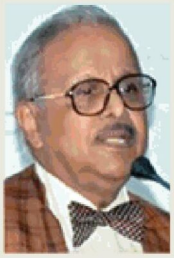

हैदराबाद के डॉ. पीएन राव के अनुसार अल्कोहल के साथ ही मोटापा भी लीवर को खराब कर रहा है। लीवर में फैट जमा होने के कारण यह स्थिति आती है। बोले, इलाज की सुविधा बढ़ने के साथ ही बीमारियां भी बढ़ी हैं। लोगों ने शारीरिक क्रियाएं कम कर दी हैं। खाना अधिक हो गया है। यह शुगर, दिल व न्यूरो संबंधित बीमारियां भी दे रही हैं। बताया, कुछ दवाएं जैसे पैरासिटामॉल, एंटी टीबी दवा, मिर्गी की दवा, कुष्ठ रोग की दवा और कुछ एंटीबॉयोटिक के नियमित व बिना डॉक्टर की सलाह के सेवन से भी लीवर खराब हो रहा है।